International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

समकालीन भारतीय कविता और वैश्विक प्रभाव

प्रो0 आशा रानी केरकेट्टा
विभागाध्यक्षए, हिन्दी विभाग, गोस्सनर महाविद्यालय, राँची।

साहित्य का मानव से घनिष्ठ संबंध है। साहित्य में मानव जीवन और उसके परिवेश को अनेक संवेदनात्मक विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है। कविता इन्हीं संवेदनात्मक विधाओं में से एक है और समय के अनुरुप इसमें अनेक बदलाव हुए और इन बदलावों को इस विधा ने समय – समय पर साहित्य में अंकित किया है। आधुनिककाल में प्रयोगवाद के बाद कविता में नये आयामों की तलाश आरंभ हुई, इन्हीं आयामों से एक है – समकालीन कविता। समकालीन कविता के विषय में कुछ विद्वान सन् 1960 ई0 के बाद इसका आरंभ मानते हैं तो कुछ 1980 के बाद। देश की आजादी के बाद जन सामान्य वर्ग की शासन के प्रति जो आस्था आकांक्षाएं थी वे बिखरने लगी। आमजन दुःख, नैराश्य, अवसाद से पीड़ित होकर शासन से अनेक सवाल करने लगा इन्हीं सवालों को समकालीन कविता का स्वरुप निर्मित होता है।

समकालीन शब्द अंग्रेजी 'कन्टेम्परेरी' का हिन्दी पर्याय है। 'बल' और 'इन' प्रत्यय से बने कालीन शब्द में सम् उपसर्ग जोड़ने से इसका निर्माण हुआ है। काल का अर्थ है – समय। इस प्रकार समकालीन का अर्थ हुआ **' एक समय होने वाला या रहने वाला**'। मानक हिन्दी कोश में समकालीन का अर्थ है – 'जो उसी काल या समय में जीवित अथवा वर्त्तमान रहा रहा है, जिसमें कुछ विशिष्ट लोग भी रहे हैं।' डॉ0 हुकुमचन्द राजपाल समकालीन शब्द के संबंध में लिखते हैं **–" समकालीन का संबंध काल विशेष के वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति के वर्त्तमान से रहा है इसे कन्टेम्परेरी के रुप में समझा जाता है।"**[1] इस प्रकार समकालीन शब्द का कोशगत अर्थ एक ही समय का, या समवयस्क होता है। समकालीन कविता की मुख्य विशेषता है – यह जनपक्षधरता का साहित्य है और उसमें सामाजिक यथार्थ, राजनीति व्यंग्य के तत्व होते हैं। समकालीन कविता रोजमर्रा की जिन्दगी में सामान्य जीवन प्रसंगों को अपने दायरे में लाती है। यह वैश्विक संदर्भ को भी उद्घाटित करती है। दलित और महिला विमर्श की अभिव्यक्ति करती है और इसका विरोध और विद्रोह की आवाज उठाती है। समकालीन कविता समाज में जागरुकता लाने, जन साधरण को प्रेरित करने में अहम भूमिका निभाती है। सामाजिक असंतोष को स्वर देती है तथा यह मानवीय मूल्यों के विघटन के प्रति तत्परता दिखाती है।

हिन्दी कविता में आजादी के बाद जो बदलाव हुए उन्हें संवेदनात्मक स्तर पर अनेक कवियों ने आत्मसात् किया। वह कवि जो आजादी से पहले राष्ट्र का ताना – बाना लेकर अपने रागात्मक संवेद के साथ

कविता करता था वह आजादी के बाद परिवर्त्तित हो गया। कारण यह था कि जिस स्वतंत्रता का सपना संजोये उस युवक ने इस देश के लिए लड़ाई लड़ी वह केवल सपना होकर रह गया। सच्चा लोकतंत्र अब भी उससे दूर था, सन् 60 के दशक के साथ ही कवि बेचैन हो उठा और उस तलाश में जुट गया जिसके चलते उसका मन टूट गया था। ऐसे में कवियों की एक विशिष्ट श्रृंखला हमारे सामने आती है। जीवन की संवेदना को जिस कवि ने भोगा और अपनाकर कविता में पिरोया।

समकालीन कविता के कई कवि हुए हैं उनमें कुछ प्रमुख कवि हैं – धूमिल, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, रघुवीर सहाय, भवानी प्रसाद मिश्र, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही आदि। वैसे तो सभी समकालीन कवियों ने अपनी रचनाओं में अपने समय की प्रत्येक परिस्थिति तथा व्यक्ति के मन का यथार्थ, राजनीति व्यंग्य को शब्दों में चित्रित किया है। इस प्रकार वह देश तथा काल के प्रत्येक पक्ष को अपने में समेटती है। ''**भूमण्डलीकरण के इस युग में बढ़ते औद्योगिक और तकनीकी विकास के चलते साहित्य में कविता इन परिस्थितियों से उत्पन्न तनावों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समकालीन कविता यथार्थ परिस्थितियों से जन्मी विचारवान कविता है।**''[2] समकालीन कविता में पर्यावरण की चिन्ता अज्ञेय की कविताओं में इस प्रकार वर्णित है। अज्ञेय का समस्त काव्य प्राकृतिक प्रतीकों से भरा पड़ा है – सूर्यास्त, सागर मुद्रा, नदी के द्वीप, साँझ – सवेरा, हिरोशिमा आदि कविताओं में मानव और पर्यावरण में अटूट संबंधों को दशार्ती है , इस संदर्भ में उनकी ''नदी के द्वीप'' शीर्षक कविता को देखा जा सकता है –

''नदी तुम बहती चलो
भूखंड से जो दाय हमको मिला है,
मिलता रहा है,
माँजती, संस्कार देती चलो :
यदि ऐसा कभी हो
तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी
स्वैराचार से – अतिचार से –
तुम बढ़ो प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे
यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्त्तिनाशा घोर
काल प्रवाहिनी बन जाए
तो हमें स्वीकार है वह भी।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

उसी रेत में होकर
फिर छिनेंगे हम
जमेंगे हम
कहीं पैर टेकेंगे।
वहीं फिर भी खड़ा होगा नए व्यक्तित्व का आकार।
मात; तुम संस्कार देना। ''[3]

इस प्रकार 'नदी के द्वीप' कविता में नदी को प्रतीक के माध्यम जीव की अनिश्चितता और परिवर्त्तनशीलता को दिखाया गया है। इसमें कवि का मूल संदेश है कि व्यक्ति को समाज के हित के लिए अपना अलग अस्तित्व बनाए रखना चाहिए। नदी कभी माँ की तरह प्यार करती है तो कभी दुलारती भी है और कभी रौद्र रुप धारण करके डराती भी है।

समकालीन हिन्दी कविता में आधुनिकता और उसके प्रतिमानों को चुनौती देने वाले नागार्जुन की कविता की अपनी एक अलग पहचान है। नागार्जुन कबीर और भारतेन्दु की परम्परा के कवि हैं जिन्होंने अपनी कविता को फक्कड़, प्रतिरोधी और लोक चेतना से सम्पन्न बनाया। जनोन्मुख संवेदना और सहज लोकधर्मिता इनकी कविता की विशेषता है। समकालीन कविता के इस पुरोधा कवि की खासियत उसकी ठेठ देहाती लहजा और भारतीय जड़ों से उसकी सम्बद्धता है। नागार्जुन प्रतिबद्ध कवि हैं। उनकी कविता पूँजीवाद व्यवस्था और पूँजीवादी राजनीति को चुनौती देती है। मनुष्य को विभाजित करने वाली व्यवस्था पर सीधे दबाव डालती है। अपनी कविता 'प्रतिबद्ध हूँ' में दो टूक लहजे में उन्होंने लिखा –

''प्रतिबद्ध हूँ , जी हाँ , प्रतिबद्ध हूँ
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त –
संकुचित 'स्व' की आपाधापी के निषेधार्थ ....
अविवेकी भीड़ की 'भेड़िया थसान' के खिलाफ........
अन्ध बधिर व्यक्तियों को सही राह बतलाने के लिए
अपने आप को भी 'व्यामोह' से बारम्बार उबारने की खातिर
प्रतिबद्ध हूँ , जी हाँ , शतधा प्रतिबद्ध हूँ !''[4]

इस प्रकार नागार्जुन ने समाज तथा साहित्य में फैलती व्यक्तिवादी संकुचित, स्वार्थी प्रवृत्ति, अविवेक, अज्ञानता का विरोध करते हुए सामान्य मनुष्य को प्रगति के निमित्त अपनी प्रतिबद्धता घोषित करते हैं।

वे अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विसंगतियों को चित्रित करते हैं। समाज में व्याप्त बेरोजगारी, भूखमरी, अकाल, गरीबी, दरिद्रता तथा अभावकारी जिन्दगी का यथार्थ उनकी कविता में दिखाई देता है –

" खाली है हाथ , खाली है पेट ,
खाली है थाली , खाली है प्लेट ।" [5]

कवि नागार्जुन लोक जीवन के कवि हैं। ग्रामीण परिवेश और उनकी परिस्थितियों पर उन्होंने काव्य रचना की। 'अकाल और उसके बाद' शीर्षक कविता में वास्तविक दृश्य उभरकर सामने आता है कि प्रकृति और मानव एक दूसरे पर आश्रित हैं और उनके बीच आपस में गहरा सम्बन्ध है –

" कई दिनों तक चूल्हा रोया , चक्की रही उदास
कई दिनों तक काली कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त
दाने आये घर के अन्दर कई दिनों बाद
धुआँ उठा आँगन के ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर – भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौवे ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।।" [6]

नागार्जुन ने इस धरती के विनाशक वैज्ञानिक अस्त्रों से बचाने की इच्छा व्यक्त की है। युद्धों का विरोध करते हुए लिखते हैं –

" पौधों और पेड़ों में कभी नहीं फली है
छुट्टियाँ
कन्द की जड़ से कभी नहीं निकला है
विस्फोटक बम
चर कर घास गाय ने दूध के बदले नहीं
दिया इलाइल
सोख कर इस धरती का जहर नहीं बरपा
कभी भी बादल।" [7]

लोक जीवन के कवि होने के कारण **''नागार्जुन की कल्पना रिक्शा खींचने वाले फटी बिवाईयों वाले , कुलिश कठोर खुरदुरे पैरों के चित्र को आंकती है और उसकी पीठ पर फटी बनियान के नीचे ''क्षार – अम्ल , विगलनकारी दाहक पसीने का गुण धर्म बताती है।''** [8] उदाहरण देखिए –

'' खूब गए
दूधिया निगाहों में
फटी बिवाइयों वाले खुरदुरे पैर
धँस गए
कुसुम – कोमल मन में
गुट्ठल घट्ठोंवाले कुलिश – कठोर पैर
दे रहे थे गति
रबड़ विहीन ठूँठ पेडलों को
चला रहे थे
एक नहीं , दो नहीं , तीन – तीन चक्र
कर रहे थे मात त्रिविकम वामन के पुराने पैरों को
नाप रहे थे अनहद फासला
घंटों के हिसाब से ढोए जा रहे थे।'' [9]

जिस प्रकार नागार्जुन लोक जीवन के कवि हैं केदारनाथ अग्रवाल जी भी जीवन के गहरे यथार्थ के कवि हैं। केदार जी पैदा तो वणिक वर्ग में हुए थे लेकिन गाँव के थे। इस कारण उनकी कविता की चिन्तन धारा का केन्द्रीय बिन्दु है – खेती किसानी , जिनकी मूल में है किसान। उनकी कविता में किसानों की दशा का वर्णन किया गया है –

''जब बाप मरा तब यह पाया ,
भूखे किसान के बेटे ने ;
घर का मलबा, टूटी खटिया ,
कुछ हाथ भूमि – वह भी परती'' [10]

केदारनाथ अग्रवाल देश की राजनीति पर भी व्यंग्य कर प्रहार करते हैं –

''न आग है
न पानी ,
देश की राजनीति
बिना आग – पानी के
खिचड़ी पकाती है
जनता हवा खाती है।'' [11]

केदार जी पेशे से वकील थे – जीविकोपार्जन का यही साधन था। जीवन की नंगी सच्चाईयाँ , समाज का असली चेहरा , न्याय पर अन्याय का बोलबाला , आदमी का दोगलापन , सच पर झूठ की विजय आदि विसंगतियाँ उन्हें कचहरी ने दिखाई। अगर वे वकील न होकर कुछ और होते तो उनकी कविताओं का यथार्थ इतना धारदार और असरदार शायद नहीं होता –

''देश के भीतर दहन और दाह है
अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर
वाह – वाह है !'' [12]

मात्र तीन पंक्तियों की इस आशु कविता में केदार जी बहुत कड़ी बात कह जाते हैं कि वर्त्तमान समय में भी हमारे देश की यही स्थिति है। इस संदर्भ में कुछ और पंक्तियां द्रष्टव्य हैं –

''जब रोटी पर संकट आया ,
तब भूखे ने द्रोह मचाया।
राज पलट कर रोटी खाया,
रोटी ने इतिहास बनाया।।'' [13]

केदारजी ने ढाई हजार कविता लिखी है। उनका काव्य, जीवन के विकास में और संघर्षों के यथार्थ पर आधारित है। वे समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार , घूसखोरी को जनता के मन से समूल नष्ट करना चाहते हैं। उन्होंने सामान्य जन जीवन के प्रति अपने काव्य में जैसी सजगता और जागरुकता दर्शायी है , अन्यत्र दुर्लभ है। केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में सामाजिक यथार्थ समूचे परिवेश के साथ विद्यामान है , तो तत्कालीन इतिहास को समझने के लिए बहुमूल्य दस्तावेज है। उन्होंने यथार्थ जीवन के निकट जाकर धरातलीय सत्य को अभिव्यक्त किया है। वे जन – जीवन के प्रति सजग और जागरुक हैं। केदार जी का समाज के प्रति प्रेम उनकी निम्न पंक्तियां को देखा जा सकता है –

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

"मुझे प्राप्त है जनता का स्वर
वह स्वर मेरी कविता का स्वर
मैं उस स्वर से
काव्य प्रखर से
युग – जीवन का सत्य लिखूँगा ,
मैं उस धन से नहीं बिकूँगा।" [14]

उनकी सबल चेतना का सबल पक्ष यही है । गरीब और सर्वहारा वर्ग के जीवन का कटु यथार्थ केदार जी की कविताओं का केन्द्र – बिन्दु है। कवि ने सामाजिक व्यवस्था से व्यथित इनके मानस को सामाजिक दुःख दैन्य ने अन्दर तक आन्दोलित किया था। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से शोषितों में क्रान्ति के बीज बो कर भावनात्मक एकता शक्ति का संचार किया। कवि केदार शान्ति के पक्षधर हैं , बंदूकों और बमों के सहारे जो लोग आजादी पाने की बात करते हैं , केदार जी के अनुसार यह गलत है –

"यह बात गलत है
विश्वास ही गलत है –
बन्दूक को चलाकर
हम शान्ति पा सकेंगे,
अणु – बम गिरा – गिरा कर,
हम त्राण पा सकेंगे
आजाद रह सकेंगे
निर्माण कर सकेंगे।" [15]

समकालीन कविता के अन्यतम कवियों में शमशेर बहादुर सिंह का नाम भी लिया जा सकता है। **"उनकी कविताओं में समकालीन कविता के सभी तत्त्व दिखाई देते हैं। शमशेर प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं, उनकी कविताओं में प्रेमानुभूति, प्रकृति चित्रण, परम्परा बोध और जनवादी चेतना में समकालीनता के तत्त्व विशेष रुप से आए हैं। उनकी कविताएं जीवन के राग विराग के साथ – साथ समकालीन स्थितियों का यथार्थ अभिव्यक्ति करती है।"** [16] शमशेर जी ने अपनी कविताओं में प्रकृति के प्राकृतिक, भौतिक सौन्दर्य को जीवन में आत्मसात् किया है। वे पल – पल परिवर्तित प्रकृति के मनोरम तथा सूक्ष्म सौन्दर्य चित्रों में मानवीय भावनाओं को मिलाकर कविताओं में प्रस्तुत करते हैं। उनके प्रकृति चित्रण में प्रकृति और मनुष्य के बीच गहरा रिश्ता उभर

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

आया है। वे प्रकृति के मुग्ध सौन्दर्य में किसी अनन्त अलौकिक सुषमा का समावेश कर देते हैं। शमशेर की कविता आत्मीय होने के कारण उसमें पारिवारिक दैनिक जीवन के बिम्ब मिलते हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

'' प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा – से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और.............
जादू टूटता है इस ऊषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।'' [17]

शमशेर जी भी कवि नागार्जुन की तरह जनवादी कवि हैं। उनकी जनववादी रचनाएँ उनके सामाजिक दायित्व बोध को जाहिर करती है। शमशेर जी की कविताओं में राजनीतिक चेतना, विदेशी शासन के प्रति विरोध, पूँजीवाद – सामन्तवाद के दुष्प्रभाव, सम्प्रादायिकता, महान समाज सुधारकों के प्रति आदर भाव, युद्ध विरोध एवं विश्व शान्ति का संदेश देखने को मिलता है। कवि ने स्वतंत्र भारत में मध्य वर्ग और शोषित वर्ग की दुःख स्थितियों का उद्घाटन करते हुए भारत की आजादी को झूठा साबित किया है। वे सम्प्रादायिकता के विरुद्ध विश्व मानवतावाद की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हैं। ' आफ्रिका' कविता में शमशेर जी वर्ण – भेद की समस्या को व्यापकता से प्रस्तुत करते हैं –

''एक बराबर के चौकोर
दो पत्थर
सजाकर उसने रखे
एक के ऊपर एक

सफेद के ऊपर काला
काला लड़का खेल रहा था
मालिक आया
है ! खेल रहा है !
हो ! हो ! हो !
ऊपर काला पत्थर
नीचे सफेद पत्थर !'' [18]

इस कविता में गोरों की रंगभेद नीति पर प्रहार करते हुए काले एवं सफेद पत्थर के माध्यम से ऊपर नीचे रंग बराबर करते हुए, खेल के बहाने गोरों की रक्त श्रेष्ठता का अभिमान चूर किया है। सफेद पत्थर गोरों का और काला पत्थर नेल्सन मंडेला का प्रतीक है। कविता में काले और सफेद पत्थर के ऊपर – नीचे खेल के जरिये पिछड़े वर्ग की संगठन क्षमता को भी चित्रित किया है।

ग्रामीण जीवन के प्रति आस्था भी शमशेर जी की कविताओं में मौजूद हैं। उनकी कविताएं किसानों के श्रम की महत्ता को उजागर करती है। शमशेर की समकालीनता इस बात में है कि वे मानव की परम शक्ति और श्रम की महत्त्व को उद्घोषित करते हैं। श्रम पर लिखी गई कविता बड़ी ही मार्मिकता से जीवन की विद्रूपताओं की ओर इशारा करती है –

''मुझे वह इस तरह निचोड़ता है जैसे
पानी में एक – एक बीज कसकर दबाकर
पेरा जाता है
मेरे लहू की एक – एक बूँद किसके लिए
समर्पित होती है
यह तर्पण किसके लिए होता है ?
सुबह के अन्न देव के लिए के लिए ?
शाम के अन्न देव के लिए ?
जिसका नाम चारा है :'' [19]

शमशेर की कविताओं में परम्परा बोध के प्रति गर्व है तथा जड़ परम्परा और जड़ व्यवस्था के प्रति विद्रोह भाव विद्यामान है। उन्होंने साम्यवादी जैसी ओजस्वी गीत भी लिखा –

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

''वाम वाम वाम दिशा
समय साम्यवादी !
पृष्ठभूमि का विरोध अंधकार – लीन ! व्यक्ति
कुहाऽ स्पष्ट हृदय – भार, आज हीन।
हीन भाव, हीन भाव
मध्यवर्ग का समाज, दीन।'' [20]

भारतीयता और भारत की अति प्राचीन भारतीय सभ्यता के प्रति शमशेर जी के मन में अटूट आस्था है। इसकी अमिट छाप उनकी कविताओं में मिलती है। वे परम्परा बोध लेकर चलते हैं। परम्परा बोध के आधार पर वे भारतीय गरिमा को प्रस्तुत करते हैं। परम्परा बोध को वे भारतीय संस्कृति की सही पहचान मानते हैं। भारत की परम्परा ही ऐसा महान है, जो विश्व कल्याण की भावना से अनुप्राणित है। समस्त विश्व में शान्ति व सुख फैलाने वाले भारत की महान भावना शमशेर की कविताओं में मुखर रहती है –

''जन का विश्वास ही हिमालय है
भारत का जन – मन ही गंगा है
हिंद महासागर लोकाशय है
यही शक्ति सत्य को उभारती है।

यह किसान कमकर की भूमि है
पवन बलिदानों की भूमि है
भव की अरमानों की भूमि है
मानव इतिहास को सँवारती ।'' [21]

समकालीन कविता की विशेषता इसी बात में देखा जा सकता है कि ये अपने समय की प्रत्येक परिस्थिति तथा व्यक्ति के मन का यथार्थ शब्दों में वर्णन करती चलती है। वह देश अथवा काल के प्रत्येक पक्ष को अपने में समेटती है।

निष्कर्ष :– निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि तत्कालीन समाज का ऐसा कोई पहलू नहीं जो समकालीन कवियों की पैनी दृष्टि से बच पाया है। आर्थिक उदारीकरण के कारण मनुष्य के जीवन – यापन का स्तर बदला, कई रुढ़ियां टूटी। गाँव और कस्बों में कामगारों और श्रमिकों की मजदूरी में कटौती के प्रति उनका आत्मबोध जागृत हुआ, कृषि कर्म आहत हुआ। दलित सम्प्रदाय के जीवन – जगत को ध्यान में रखती हुई ,

समकालीन कविता इन सभी स्तरों में समकालीन हुई। इसी के साथ हिन्दी में दलित कविता की सशक्त उपस्थिति दर्ज की गई। समकालीन कविता की महत्वपूर्ण विशिष्टता यह है कि – इस समय के कवियों ने मानव जीवन की प्रत्येक पक्ष को अपने काव्य द्वारा बड़े ही यथार्थ रुप में प्रस्तुत किया है। समकालीन कविता लोकजीवन से जुड़ी होने के कारण शोषण तंत्र से मुक्ति दिलवाने की कोशिश है। समकालीन कविता की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशिष्टता यह है कि – इस समय के कवियों ने मानव जीवन के पत्येक पक्ष को अपने काव्य द्वारा बड़े ही यथार्थ रुप में प्रस्तुत किया है। समकालीन कविता जन पक्षधरता की कविता होने के कारण सभी समकालीन कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज की समस्याओं को उजागर किया है और आम आदमी की आर्थिक पीड़ाओं, शोषणों को दिखाया है। समकालीन कविता आत्मबोध से विश्व बोध तक जाती है और कविता के माध्यम से युवा भागीदारी की माँग रखने के साथ समाज में जागरुकता लाने और जन – साधरण को प्रेरित करने में अहम भूमिका निभाती है। यह कविता मानवीय मूल्यो के विघटन के प्रति तत्परता भी दिखाती है तथा कविता के माध्यम से समाज को सही मार्ग दिखाने की कोशिश की जाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समकालीन कविता के कवियों ने समाज में जागरुकता लाने, जन – साधरण को प्रेरित करने में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची : –

1. 'समकालीन बोध और धूमिल का काव्य' सम्पादक : हुकुमचन्द राजपाल – पृष्ठ – 11
2. श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, चंदा जैन : वैश्विक पर्यावरण परिदृश्य और समकालीन हिन्दी कविता
3. सन्नाटे का छंद संपादक : अशोक बाजपेयी, रचनाकार अज्ञेय प्रकाशन , वाग्देवी प्रकाशन , संस्करण 1990
   पृष्ठ – 50
4. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन – 1984, सम्पादक : डॉ नामवर सिंह , 'मैं प्रतिबद्ध हूँ'
   पृष्ठ – 16
5. नागार्जुन रचनावली खंड – 1, संपादन संयोजन – शोभाकान्त, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 2003
6. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएँ ,राजकमल प्रकाशन – 1984 'अकाल और उसके बाद' शीर्षक कविता
7. 'समकालीन कविता' : विश्वनाथ प्रसाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ – 69
8. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, संवादक : डॉ नामवर सिंह – भूमिका, पृष्ठ – 6

9. वही – 'खुरदुरे पैर' शीर्षक कविता पृष्ठ – 35
10. केदारनाथ की प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन – 2010, संपादक : डॉ नामवर सिंह, कविता 'पैतृक सम्पत्ति' पृष्ठ – 34
11. वही – 'देश की राजनीति' शीर्षक कविता पृष्ठ – 122
12. वही – 'देश के भीतर' शीर्षक कविता पृष्ठ – 140
13. वही – 'रोटी' शीर्षक कविता पृष्ठ – 62
14. 'केदारनाथ अग्रवाल कहे, केदार खरी – खरी' : साहित्य भंडार इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – 2009, पृष्ठ – 128
15. 'वसन्त में प्रसन्न हुई पृथ्वी' – केदारनाथ अग्रवाल : साहित्य भंडार इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – 2009, पृष्ठ – 43
16. अपनी माटी : शोध आलेख – 'शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं में समकालीनता' – डॉ सचिन गपाट, दिसम्बर 30, 2021
17. शमशेर बहादुर सिंह की प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन – 1990, 'उषा' शीर्षक कविता पृष्ठ – 102
18. वही – 'आफ्रिका' शीर्षक कविता पृष्ठ – 176
19. वही – 'बैल' शीर्षक कविता पृष्ठ – 171
20. वही – 'वाम वाम वाम दिशा' शीर्षक कविता पृष्ठ – 47
21. वही – 'भारत की आरती' शीर्षक कविता पृष्ठ – 70 – 71